चित्रःगूगल से साभार

सीता-राधा

सीता सा त्याग व राधा सा प्रेम
सीता सा त्याग व राधा सा प्रेम
गर कर सकी मैं
तो क्या तुम राम सा चरित्र व कृष्ण सा ज्ञान दे पाओगे।
फूलों की इच्छा नहीं
काटों की शय्या पर गर चली सकी मैं
तो क्या तुम प्रेम रूपी मरहम लगा पाओगे।
पूर्ण मिलन की तो तुमसे आशा नहीं
क्षण भर तुमसे गर मिल सकी मैं
तो क्या तुम पूर्ण अहसास दिला पाओगे।
वास्तविकता तो कुछ और ही है
काल्पनिक गर कुछ कर सकी मैं
तो क्या तुम मेरी कल्पना को वास्तविकता में बदल पाओगे।
जरूरत तो तुझसे कुछ नहीं
जरूरी कुछ गर सकी मैं
तो क्या तुम मेरी जरूरत को जरूरी समझ पाओगे
सीता सा त्याग व राधा सा प्रेम
गर कर सकी मैं
तो क्या तुम राम सा चरित्र व कृष्ण सा ज्ञान दे पाओगे।

पूजा अग्रवाल

जून2023 साहित्य रत्न वर्ष1 अंक2